महाकवि

वाल्मिकी कृत

मूल रामायणम्

(भाषा)

रिणः ॥ शृण्वन्रामकथानादंकोन
तौ मतिपरांगतिम् ॥ ३ ॥ ॥ ॥

जैसे बनमें फिरते सिंहका नाद सुनतेही मौतको कौन न पावै ? वैसेही, कवितारूप बनमें फिरते, वाल्मीकिमुनिरूप सिंहके नादसे, कौन ! मोक्षको न जावै ? " सबही जावै " ॥ ३ ॥

यःपिबन्सततं रामचरितामृतसा
गरं ॥ अतृप्तस्तंमुनिंवंदेप्राचेतस
मकल्मषम् ॥ ४ ॥ ॥ ॥

और, जे पापरहित वाल्मीकिमुनि, निरंतर रामचरितरूप अमृत-समुद्रको पीवतेभी भूखे है विनको मैं नमस्कार करता हौं ॥ ४ ॥

गोष्पदीकृतवारीशंमशकीकृतराक्ष
सं ॥ रामायणमहामालारत्नंवंदेनि
लातमजम् ॥ ५ ॥ ॥ ॥

अब, जिननें महासमुद्र, गायके खुरसे हुए खड्डेके जलके नाई लाँघा, औ बडे बडे म... मच्छरके नाई रगडडाले ऐसे रामायणर... ...माला-लाके सुमेरु जे पवनपूत श्रीहनुमान विनको वंदन करुंहुं ॥ ५ ॥

अंजनीनंदनंविरंजानकीशोकनाशनम् ॥ कपीशमक्षहंतारंवंदेलंकाभयंकरम् ॥ ६ ॥ ॥ ॥

औ जानकीजीके शोकनाशक, औ अक्षकुमारके प्राणहारक औ लंकाको भयंकर, जे अंजनीपुत्र महावीर हनुमानजी विनको वंदूहुं ॥ ६ ॥

उल्लंघ्यसिंधोःसलिलंसलीलंयःशोकवन्हिंजनकात्मजायाः ॥ आदायतेनैवददाहलंकांनमामितंप्रांजलिरांजनेयम् ॥ ७ ॥ ॥ ॥

और जे अंजनीपुत्र हनुमानजी खेलत खेलत तौ महासागरके पार कूद गए, फेर श्रीजानकी-जीके शोकहीको मानों अग्नि बना, लंकाको जलतेभये तिनको हात जोड नमताहुं ॥ ७ ॥

मनोजवंमारुततुल्यवेगंजितेंद्रियंबु-द्धिमतांवरिष्ठं ॥ वातात्मजंवानरयू-थमुख्यंश्रीरामदूतंशिरसानमामि ॥८॥

औ, मनके तुल्य जलदी औ वायुके तुल्य झपाटेवाले, जितेंद्रिय, महाबुद्धिमानोंमें बडे औ संपूर्ण-वानर-समुदायमें बडे ऐसे जे श्रीराम-के दूत, पावनके पूत श्रीहनुमान उनको मस्तकके बल नमताहुं ॥ ८ ॥

श्रीराघवंदशरथात्मजमप्रमेयंसीता पतिंरघुकुलान्वयरत्नदीपम् ॥ आ

जानुबाहुमरविंददलायताक्षंरामंनि
शाचरविनाशकरंनमामि ॥ ९ ॥ ॥

दशरथके पुत्र, अपरिमित-पराक्रमी, सीताके पती, रघुकुलीओंके वंशमें रत्नदीपकसे आजानुबाहु, (घुटनातक लंबे हातवाले) कमळकी फकडीसमान औ विशाल नेत्रवाले, औ राक्षसोंके विनाश करनेवाले जे श्रीराघव रामचंद्र, उनको नमताहुं ॥ ९ ॥

वेदवेद्येपरेपुंसिजातेदशरथात्मजे ॥
वेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामाय
णात्मना ॥ १० ॥ ॥ ॥

जब, वेदोंसे जानेजाय ऐसे परब्रह्म दशरथके पुत्र भये तब वेदभी श्रीवाल्मीकि-मुनिसे रामायणरूप होके उत्पन्न भये ॥ १० ॥

शृण्वन्रामायणंभक्त्यायःपादंपदमेववा ॥ सयातिब्रह्मणःस्थानंब्रह्मणापूज्यतेसदा ॥ ११ ॥ ॥ ॥

अब, जो मनुष्य श्रीरामायणको पावश्लोक वा एक पदही, भावभक्तिसें सुणे तौं वह मुक्तिको जाता है, औ ब्रह्मासेभी सदा पूजित होताहै ११

यःकर्णांजलिसंपुटैरहरहःसम्यक्पिबत्यादरात्वाल्मीकेर्वदनारविंदगलितंरामायणाख्यंमधु ॥ जन्मव्याधिजराविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवंसंसारंसविहायगच्छतिपुमान्विष्णोःपदंशाश्वतम् ॥ १२ ॥ ॥ ॥

जो मनुष्य, ए वाल्मीकिमुनिके मुखकमलमेसें टपके हुए श्रीरामायण-मधुको, आदरसे कान-

रूप अंजलि-संपुटोंकरके पीताहै; सो जन्म लेना, रोग होना, बुढे होना, आफत औ मरण इत्यादिकोंकरके अत्यंत उपद्रवसहित जो संसार तिसको छोड, सनातन विष्णुलोकको जाता है १२

तदुपगतसमाससंधियोगंसममधुरप्रणतार्थवाक्यबद्धं ॥ रघुवरचरितंमुनिप्रणीतंदशशिरसश्चवधंनिशामयध्वं ॥ १३॥ ॥ ॥ ॥

वाल्मीकि-मुनिका रचाभया औ जिसमे प्रत्येक वाक्योंमें समास, संधि औ प्रयोग आदि व्याकरणके गुण; औ अनुप्रास, मधुरता औ सरल-अर्थ आदि काव्यके गुण भरेहै औ दशसीसके वध जिसमें है ऐसे श्रीराम-चरितको सुनो ॥१३॥

यत्रयत्ररघुनाथकीर्तनंतत्रतत्रकृतम-

स्तकाञ्जलिम्॥ बाष्पवारिपरिपूर्ण
लोचनंमारुतंनमतराक्षसांतकं ॥ १४॥

जहां जहां श्रीरघुनाथजीकी सुंदर कथा होतीहै, तहा तहां हस्त अंजरी मस्तककों लगा नमतेसंते औ आंखोंमें प्रेमके आंसूं भरैहै ऐसे आवतेहै; ऐसे जे राक्षस-घाती वायुपुत्र तिनको नमन करो ॥ १४ ॥

वाल्मीकिगिरिसंभूतारामसागरगा
मिनी॥पुनातिभुवनंपुण्यारामायण
महानदी॥ १५॥ ॥ ॥ ॥

वाल्मीकिमुनिरूप पर्वतसे निकलके श्रीरामरूप समुद्रको जाती जो रामायणरूप महानदी, सो सकल लोकोंको पवित्र करती है॥ १५॥

जितंभगवतातेनहरिणालोकधारि

णा ॥ अजेनविश्वरूपेणानिर्गुणेनगु
णात्मना ॥ १६ ॥ ॥ ॥

सबलोकोंके धारण कर्त्ता, संपूर्ण विश्वव्यापक, अजेय, औ निर्गुण होके सगुणरूप, ऐसे जे भगवान् हरि विनने संपूर्ण जग जीताहै ॥ १६ ॥

तपःस्वाध्यायनिरतंतपस्वीवा
ग्विदांवरम् ॥ नारदंपरिपप्रच्छ
वाल्मीकिर्मुनिपुंगवम् ॥ १७ ॥ ॥

अब मूलवाल्मीकीय रामायण ॥ अब तपस्वी वाल्मीकिमुनि, तप औ वेदाध्ययनमें तत्पर, औ वक्ताओंमें श्रेष्ठ ऐसे मुनिवर नारदजीकों पूछते भये ॥ १७ ॥

कोन्वस्मिन्सांप्रतंलोकेगुणवान्कश्च
वीर्यवान् ॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चसत्य
वाक्योदृढव्रतः ॥ १८ ॥ ॥

यहलोकमें यहकालमें, गुणवान्, पराक्रमी, धर्मात्मा, किये उपकारको जाने, सत्यवक्ता औ कड़े व्रत (चरित) वाला ऐसा कौन है ? ॥१८॥

चारित्रेणचकोयुक्तःसर्वभूतेषुकोहि
तः ॥ विद्वान्कःकःसमर्थश्चकश्चैको
प्रियदर्शनः ॥१९॥ ॥ ॥

शुभ-चरित्रोंकरके कौन युक्त है? सब प्राणिओंमें कोन हितकर्ता है ? कौन विद्वान ? औ कौन समर्थ है? और केवल प्रियही है, देखना जिसका अन्यथा कभी नहीं, ऐसा कौन ? ॥१९॥

आत्मवान्कोजितक्रोधोद्युतिमान्को
नसूयकः ॥ कस्यबिभ्यतिदेवाश्चजा
तरोषस्यसंयुगे ॥ २० ॥ ॥

कौन आत्मावान्? औ कौन जित-

क्रोध? कौन तेजस्वी? औ कौन, दूसरोंका महत्व देखके सहन करताहै? और क्रोधी भयेहुए किसको युद्धमें देख, देवभी डरपते है? ॥ २० ॥

एतदिच्छाम्यहंश्रोतुंपरंकौतूहलंहि मे ॥ महर्षेत्वंसमर्थोऽसिज्ञातुमेवंविधंनरम् ॥ २१ ॥ ॥ ॥

हे महर्षि! आप ऐसे मनुष्यको जाननेको समर्थ हो, सो मैं यह सुननेको इच्छा करताहुँ, मेरेको यह बडा भारी संदेह है? ॥ २१ ॥

श्रुत्वाचैतत्त्रिलोकज्ञोवाल्मीकेर्नारदो वचः ॥ श्रूयतामितिचामंत्र्यप्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥ २२ ॥ ॥ ॥

ऐसें वाल्मीकिका बचन सुनके, हे मुनि! सुनों ऐसे केहके; तीनोंलोकोंकी बात जाननेवाले नारदमुनि प्रसन्न होके यह वाक्य बोलतभये २२

बहवोदुर्लभाश्चैवयेत्वयाकीर्तितागु
णाः ॥ मुनेवक्ष्याम्यहंबुद्ध्वातैर्युक्तःश्रू
यतांनरः ॥ २३ ॥ ॥ ॥

हेमुनि ! जे गुण बहुतसे आपने कहै ते एकमें मिलने दुर्लभहै; परंतु विनगुणोंसे युक्त पुरुष, मैं विचारमें जानके, कहताहुं सो सुनो ! ॥ २३ ॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवोरामोनामजनैःश्रु
तः ॥ नियतात्मामहावीर्योद्युतिमा
न्धृतिमान्वशी ॥ २४ ॥ ॥

इक्ष्वाकुराजाके वंशमें उत्पन्न भये ऐसे श्रीराम-नाम मनुष्यावतार प्रभु लोकविख्यातहै; सो वश्य-आत्मा, महापराक्रमी, तेजस्वी, धीरजवान्, आ समर्थ है. ॥ २४ ॥

बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मीश्रीमाञ्छ

त्रुनिबर्हणः ॥ विपुलांसोमहाबाहुःकं
बुग्रीवोमहाहनुः ॥ २५ ॥ ॥ ॥

और वे बुद्धिमान्, नीति-जाननेवाले, प्रियवादी, अतिरमणीक, शत्रुनाशक, विशाळ कंधावाले, महाबाहु, शंखसी गरदनवाले, औ भारी जबाडा (ठोडी) वाले हैं. ॥ २५ ॥

महोरस्कोमहेष्वासोगूढजत्रुररिंदमः ॥
आजानुबाहुःसुशिराः सुलसाटःसुवि
क्रमः ॥ २६ ॥ ॥ ॥

विशाल छाती, बडा धनुष्य, कंधेसे मिलता मुसाकडाहै जिनके, औ भक्तोंके शत्रु जे कामक्रोधादि तिनको नाशनेवाले, और जिनके घुटनोंतक लंबे हात, सुंदर मत्था औ कपाल; औ अद्भुत पराक्रम, ऐसेहैं ॥ २६ ॥

समःसमविभक्तांगःस्निग्धवर्णःप्र
तापवान् ॥ पीनवक्षाविशालाक्षोल
क्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥ २७ ॥ ॥

नतौ उंचा न नीचा ऐसा मध्यम शरीर, सब हस्तपादादि अंग बरोबरीके औ छुटे छुटे, चिकना शरीरका वर्ण है जिनके औ प्रताप (जिस पुरुषार्थको सुनतेही शत्रुओंकी छाती फटै ऐसे)-वाले, पुष्टछातीवाले, बडे बडे नेत्र, सीतारूप लक्ष्मीसे सहित, औ सब सामुद्रिक-उत्तम लक्षणोंसे युक्त है. ॥ २७ ॥

धर्मज्ञःसत्यसंधश्चप्रजानांचहितेर
तः ॥ यशस्वीज्ञानसंपन्नःशुचिर्व
श्यःसमाधिमान् ॥ २८ ॥ ॥

औ जे धर्म-जानते, सत्य-प्रतिज्ञ, प्रजाओंके भलमें तत्पर, यशस्वी, ज्ञानसंयुक्त, पवित्र-चरित्र,

सर्वशक्तिमान्, औ स्थिर-चित्त ऐसे है ॥ २८ ॥

प्रजापतिसमःश्रीमान्धातारिपु
निषूदनः ॥ रक्षिताजीवलोकस्य
धर्मस्यपरिरक्षिता ॥ २९ ॥ ॥

औ जे परब्रह्मके तुल्य, सकल-ऐश्वर्यवान्, धारण पोषण कर्ता आश्रितोंके शत्रुओंको नाशक, चराचर जगतके रखवारे, औ वर्णाश्रम-धर्मके प्रवृत्तिद्वारा पालन कर्ता है ॥ २९ ॥

रक्षितास्वस्यधर्मस्यस्वजनस्यचर
क्षिता ॥ वेदवेदागंतत्त्वज्ञोधनुर्वे
देचनिष्ठितः ॥३०॥ ॥ ॥

और जे राम अपने क्षत्रिय-धर्म यज्ञयागादि तिनको रक्षण करता, अपने लोकोंके रखवारे, चारों वेदोंके औ व्याकरणादि छओं वेदांगोंके तत्वको जानते, औ धनुर्विद्याओं (अस्त्रों) में परिपूर्ण ऐसें है ॥ ३० ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञःस्मृतिमान्प्र
तिभानवान् ॥ सर्वलोकप्रियःसा
धुरदीनात्माविचक्षणः ॥ ३१ ॥

छओं शास्त्रोंके अर्थ-तत्त्वको जानते, एकबार देखी या सुनी वस्तु जन्मताई याद रखनेवाले, समय योगमें पंडित, सब लोकोंके प्रिय, सच्चरित्र, अतिउदार, औ परम-विद्वान ऐसे हैं ॥ ३१ ॥

सर्वदाभिगतःसद्भिःसमुद्रइवासिं
धुभिः ॥ आर्यःसर्वसमश्चैवसदैव
प्रियदर्शनः ॥ ३२ ॥ ॥

सदासर्वदा सत्पुरुषोंसे सेवित; जैसे समुद्र नदीओंसे, सर्वपूज्य, सुखदुःखादिकोंमें समान, औ सदाही मनोहर-दर्शन ऐसे हैं ॥ ३२ ॥

सचसर्वगुणोपेतःकौसल्यानंदवर्ध

नः ॥ समुद्रइवगाभीर्येधैर्येणहि
मवानिव ॥ ३३ ॥ ॥

वे सबगुणयुक्त कौसल्यानंदन; समुद्रसे गंभीर, हिमालय पर्वतसे धीर, ॥ ३३ ॥

विष्णुनासदृशोवीर्येसोमवत्प्रिय
दर्शनः ॥ कालाग्निसदृशःक्रोधेक्ष
मयापृथिवीसमः ॥ ३४ ॥ ॥

पराक्रमी विष्णूसे, चंद्रसे प्रियदर्शन, महाप्रलयके अग्नितुल्य क्रोधमें, पृथ्वीतुल्य क्षमामें ३४

धनदेनसमस्त्यागेसत्येधर्मइवा
परः ॥ तमेवंगुणसंपन्नंरामंसत्य
पराक्रमम् ॥ ३५ ॥ ॥

धन-दाता कुबेरकीनांई, सत्यमें मानों दुसरे धर्महीहो, ऐसे-गुणोंकरके युक्त, सत्य-पराक्रमी ३५

ज्येष्ठंश्रेष्ठगुणैर्युक्तंप्रियंदशरथः
सुतम् ॥ प्रकृतीनांहितैर्युक्तंप्रकृ
तिप्रियकाम्यया ॥ ३६ ॥ ॥

बडे-गुणोंकरके युक्त, बडे प्रिय पुत्रको प्रजाओंके हित कर्ता देख, राजा दशरथनें ॥ ३६ ॥

यौवराज्येनसंयोक्तुमैच्छत्प्रीत्या
महीपतिः ॥ तस्याभिषेकसंभारा
न्दृष्ट्वाभार्याथकैकयी ॥ ३७ ॥ ॥

युवराज नवेराजाकी पदवीमें स्थापन करनेको प्रेमसें इच्छा करी; उनके राज्याभिषेककी सामग्रीको दशरथराजाकी स्त्री कैकयी राणी देखके ॥ ३७ ॥

पूर्वंदत्तवरादेवीवरमेनमयाचत ॥
विवासनंचरामस्यभरतस्याभिषे
चनम् ॥ ३८ ॥ ॥ ॥

जे पहले राजाने वरदान दिये हते, ते मांगती भयी; एक तौ रामको वन-वास औ दूसरो भरतको राज्य ॥ ३८ ॥

ससत्यवचनाद्राजाधर्मपाशेनसंयुतः ॥ विवासयामाससुतंरामंदशरथःप्रियं ॥ ३९ ॥ ॥

अब वह दशरथराजा धर्मके फांसेमें बंधाहुवा सत्यवादी अपना बचन (वरदानरूप) सत्य करके, प्रिय-पुत्र रामको वनवास देत भया ॥ ३९ ॥

सजगामवनंवीरःप्रतिज्ञामनुपालयन् ॥ पितुर्वचननिर्देशात्कैकेय्याःप्रियकारणात् ॥ ४० ॥ ॥

अब वह वीर राम; पिताकी आज्ञासे अपने पिताकी प्रतिज्ञा पालन करनेको औ कैकयी राणीके प्रिय होनेको वनको जाते भये ॥ ४० ॥

तं व्रजंतंप्रियोभ्राताlलक्ष्मणोनुज
गामह ॥ स्नेहाद्विनयसंपन्नःसुमि
त्रानंदवर्धनः ॥ ४१ ॥ ॥

ऐसे श्रीरामको वनको जाते देख सुमित्राके आनंदको बढानेवाले, विनयवान, भाई लक्ष्मण, स्नेह करिके साथ जानेको तयार भये ॥ ४१ ॥

भ्रातरंदयितोभ्रातुःसौभ्रात्रमनु
दर्शयन् ॥ रामस्यदायिताभार्या
नित्यंप्राणसमाहिता ॥ ४२ ॥ ॥

ऐसे भाईके प्रिय लक्ष्मण भाईपनेको राखते, भाई रामके पीछे भये; फेर, श्रीरामकी प्रियस्त्री सीता जे नित्य रामको प्राणसी प्यारी औ हित-कर्त्री ॥ ४२ ॥

जनकस्यकुलेजातादेवमायेवनि

र्मिता ॥ सर्वलक्षणसंपन्नानारीणा
मुत्तमावधूः ॥ ४३ ॥ ॥ ॥

जनकके घरमें उत्पन्न भयी, साक्षात् विष्णुमा-
या, सब लक्षणोंकरके संपन्न, संपूर्ण स्त्रियोंमें उत्तम
स्त्री, ॥ ४३ ॥

सीताप्यनुगतारामंशशिनंरोहि
णीयथा ॥ पौरैरनुगतोदूरंपित्रादं
शरथेनच ॥ ४४ ॥ ॥ ॥

ऐसी सीताभी संग हो ली; जैसे चंद्रके संग
रोहिणी. फेर सब पुरवासीभी थोडी दूर साथ भ-
ये, कुछ दूर दशरथ-राजाभी भये ॥ ४४ ॥

शृंगवेरपुरेसूतंगंगाकूलेऽयसर्जय
त् ॥ गुहमासाद्यधर्मात्मानिषादा
धिपतिंप्रियं ॥ ४५ ॥ ॥ ॥

तिस पीछे गंगातीर श्रृंगवेरपुरतक जाके सारथीकोभी बिदा करत भये, फेर धर्मात्मा-राम, बहुत प्रिय ऐसे भिल्लोंके राजा गुहसें मिले ॥४५॥

गुहेनसहितोरामोलक्ष्मणेनचसीतया॥ तेवनेनवनंगत्वानदीस्तीर्त्वाबहूदकाः ॥ ४६ ॥ ॥

अब श्रीराम; लक्ष्मण, सीता औ गुह इनोंको साथ लेकर वनोंको लांघते औ नदीओंको पार उतरते ॥ ४६ ॥

चित्रकूटमनुप्राप्यभरद्वाजस्यशासनात् ॥ रम्यमावसथंकृत्वारममाणावनेत्रयः ॥ ४७ ॥ ॥

सब, भारद्वाज ऋषिके कहनेसे चित्रकूट पर्वतपर गये, उहां राम, लक्ष्मण, सीता, तीनोंजनें; सुंदर आश्रम बना, सुख-निवास करने लगे ॥४७॥

देवगंधर्वसंकाशास्तत्रतेन्यवस
न्सुखम् ॥ चित्रकूटंगतेरामेपुत्र
शोकातुरस्तदा ॥ ४८ ॥ ॥

देवों औ गंधर्वोंके समान ये तौ यहां रहै, और इधर, श्रीरामके चित्रकूट गयेपर पुत्रशोक-करके आतुर ऐसे ॥ ४८ ॥

राजादशरथःस्वर्गंजगामविलप
न्सुतम् ॥ गतेतुतस्मिन्भरतो
वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः ॥ ४९ ॥ ॥

दशरथ-राजा; रामका विलाप करत करत स्वर्ग-को सिधारे (मरे)-फेर उसके पीछे भरतको व-सिष्ठ आदि सब लोकोंने, ॥ ४९ ॥

नियुज्यमानोराज्यायनैच्छद्रा

ज्यंमहाबलः ॥ सजगामवनंवी
रोरामपादप्रसादकः ॥ ५० ॥

राज्यमें बैठाने किया, पर उसने न माना और महाबली वीर भरत, रामकी चरणसेवा करनेको बनमें जाते भये ॥ ५० ॥

गत्वातुसमहात्मानंरामंसत्यप
राक्रमम् ॥ अयाचद्भ्रातरंराममा
र्यंभावपुरस्कृतः ॥ ५१ ॥ ॥

सो चित्रकूटपर जा, अपने भाई जे सत्यप्रतिज्ञा-वाले, पराक्रमी, श्रीराम; उनको विनयपूर्वक राज्य-करनेको अयोध्या आवनेको मांगते (भये)॥५१॥

त्वमेवराजाधर्मज्ञइतिरामंवचो
ब्रवीत् ॥ रामोपिपरमोदारःसुमु
खःसुमहायशाः ॥ ५२ ॥ ॥

औ कहा कि हे धर्मात्मा श्रीराम ! आपही राजा है, हमतो आपके दासहै. तब श्रीरामभी अति-उदार हो हँसमुख होके ॥ ५२ ॥

नचैच्छत्पितुरादेशाद्राज्यंरामोमहाबलः ॥ पादुकेचास्यराज्याय न्यासंदत्वापुनःपुनः ॥ ५३ ॥ ॥

महाबलवान है तौभी पिताकी आज्ञाके अनुसार राज्य करनेको नाही करके भरतको बहुत आग्रही देख, अपनी खडाऊ दी, औ वार वार कहा कि इनपादुकाओंकु राज्याधिकारी करके हम आवें तबतक, राज्य तेरेपास अनामत रेहनेदे ॥ ५३ ॥

निवर्तयामासततोभरतंभरताग्रजः ॥ सकाममनवाप्यैवरामपादावुपस्पृशन् ॥ ५४ ॥ ॥

ऐसा कह, बडेभाई श्रीराम, भरतको विदा करते भये; भरतभी, इच्छातौ पूरी न भयी, पर श्रीरामकी आज्ञासे, उनके चरण-स्पर्श करके नमस्कार किया ॥ ५४ ॥

नंदिग्रामेकरोद्राज्यंरामागमनकांक्षया ॥ गतेतुभरतेश्रीमान्सत्यसंधोजितेंद्रियः ॥ ५५ ॥ ॥

फेर भरत नंदिग्राममें आ-कर, श्रीरामके आनेको चाहत संते खडाऊ-पर राज्याऽभिषेक कर, राज्य समालने लगा. अब भरतके जानेपर; सत्य-प्रतिज्ञ, जितेंद्रिय, श्रीराम; ॥ ५५ ॥

रामस्तुपुनरालक्ष्यनागरस्यजनस्यच ॥ तत्रागमनमेकाग्रोदंडकान्प्रविवेशह ॥ ५६ ॥ ॥

चित्रकूटमे, सब नगर-वासीओंकी आनेजाने-

की गडबड देख, एकात निवासके लिये दंडक बनमें प्रवेश करते भये ॥ ५६ ॥

प्रविश्यतुमहारण्यंरामोराजीवलोचनः ॥ विराधंराक्षसंहत्वाशरभंगंददर्शह ॥ ५७ ॥ ॥

तिस बडे वनमें जाय, कमल-नेत्र श्रीराम विराध राक्षसको मार, शरभंग-मुनिके दर्शन करत भये ॥ ५७ ॥

सुतीक्ष्णंचाप्यगस्त्यंचअगस्त्यभ्रातरंतथा ॥ अगस्त्यवचनाच्चैवजग्राहैंद्रंशरासनम् ॥ ५८ ॥ ॥

फेर सुतीक्ष्णमुनि, अगस्त्यमुनि, अगस्त्यके भाई, (इध्मवाहन) इनोंके दर्शन कर, अगस्त्यमुनिके कहनेसे; जो, रामने परशुरामसे लेकर वरुणके पास रखाथा, वही इंद्रने लाकर अग-

स्त्यके पास रखाथा, वह धनुष्य राक्षस-विनाशार्थ आप श्रीराम लेतेभये ॥ ५८ ॥

खड्गंचपरमप्रीतस्तूणीचाक्षयसायकौ ॥ वसतस्तस्यरामस्यवनेवनचरैःसह ॥ ५९ ॥ ॥

और खड्ग, (तरवार) अक्षय-बाणोंके दोदो-भाते ये सब, अब, राक्षस-विनाश करना है ऐसे प्रसन्न होकर ले-लिये, औ उस वनमें वानप्रस्थ आश्रमवाले मुनिओंके संग रहने-लगे ॥ ५९ ॥

ऋषयोऽभ्यागमन्सर्वेवधायासुररक्षसाम् ॥ सतेषांप्रतिशुश्रावराक्षसानातदावने ॥ ६० ॥ ॥

उहां सब ऋषि-लोक मिलके आये, और असुरों औ राक्षसोंके मारनेकी प्रार्थना करतेभये; उनोंको राक्षसोंका भय सुनके ॥ ६० ॥

प्रतिज्ञातश्चरामेणवधःसंयतिरक्ष
सां ॥ ऋषीणामग्निकल्पानांदंड
कारण्यवासिनाम् ॥६१॥ ॥

श्रीरामने; दंडक वनवासी, अग्निसमान तेज-
स्वी ऐसे ऋषिओंके मध्य, सब राक्षसोंका संग्रा-
ममे वध (नाश) करनेकी प्रतिज्ञा करी. ॥६१॥

तेनतत्रैववसताजनस्थाननिवा
सिनी ॥ विरूपिताशूर्पणखाराक्ष
सीकामरूपिणी ॥ ६२ ॥ ॥

फेर उहांही रहके श्रीरामने लक्ष्मणके हात,
मनचिते रूप बनानेवाली जो जनस्थान(नासि-
क) में रहनेवाली शूर्पणखा-राक्षसी उसके नाक,
कान काट, कुरूप करी ॥ ६२ ॥

ततःशूर्पणखावाक्याद्दुद्युक्तान्सर्व

राक्षसान् ॥ खरंत्रिशिरसंचैवदूष
णंचैवराक्षसम् ॥ ६३ ॥ ॥

फेर शूर्पणखाके कहनेसे लडने तयार भये जे सब राक्षस; खर, त्रिशिरा, दूषण, इनको; ॥६३॥

निजघानरणेरामस्तेषांचैवपदानु
गान् ॥ वनेतस्मिन्निवसताजन
स्थाननिवासिनाम् ॥ ६४ ॥

श्रीराम मारते भये, औ उनके साथ जे जनस्थानमें रहनेवाले राक्षस आये उनकोभी उहांही रहके मारत भये ॥ ६४ ॥

रक्षसांनिहतान्यासन्सहस्राणि
चतुर्दश ॥ ततोज्ञातिवधंश्रुत्वारा
वणःक्रोधमूर्छितः ॥ ६५ ॥ ॥

एसे चौदह हजार १४००० राक्षस मारेगये,

तिस पीछे अपने जातिवाले राक्षसोंका नाश सु-
नके क्रोधसे परिपूरित होके रावण, हडबडाया ६५

सहायंवरयामासमारीचंनामरा
क्षसम् ॥ वार्यमाणःसबहुशोमारी
चेनसरावणः ॥ ६६ ॥ ॥ ॥

फेर वह रावण अपने मामा मारीच-नामके
राक्षसको सहाय मांगनेलगा, सो उस मारीचने इस
रावणको बहुत समुझाया; ॥ ६६ ॥

नविरोधोबलवताक्षमोरावणतेन
ते ॥ अनादृत्यतुतद्वाक्यंरावणः
कालचोदितः ॥ ६७ ॥ ॥

की, हेरावण ! उस बलवान रामसे साथ तेरा ल-
डना अच्छा नहीं है. पर होनहार कालकी प्रेरणासे
उस रावणने मारीचके कहनेको न माना ॥६७॥

जगामसहमारीचस्तस्याश्रमपदं
तदा ॥ तेनमायाविनादूरमपवा
ह्यन्नृपात्मजौ ॥ ६८ ॥ ॥

औ मारीचको साथ लेकर रावण, श्रीरामके आश्रममें गया, और मायावी मारीच हरिणाबन, राम औ लक्ष्मण दोनों भाईओंको दूर लेगया ६८

जहारभार्यांरामस्यगृध्रंहत्वाज
टायुषम् ॥ गृध्रंचनिहतंदृष्ट्वाहृतां
श्रुत्वाचमैथिलीम् ॥ ६९ ॥ ॥

औ रावणनें आश्रममेंसे जटायुको मारके, रामकी स्त्री सीता हरण करी (चोराई); फेर लक्ष्मणसहित राम आश्रममें आय, मरे जटायूको देख, औ सीताको हरीहुयी सुनके, ॥ ६९ ॥

राघवःशोकसंतप्तोविललापाऽकु

लेंद्रियः ॥ ततस्तेनैवशोकेनगृध्रं दग्ध्वाजटायुषम् ॥ ७० ॥ ॥

रघुराजाके कुलोत्पन्न राम, मारे शोकके संतापित हो, विलाप करने (रोवने) लगे; फेर उस शोकसे भरेहुवेभी श्रीरामने जटायूको विधिसे जलाया ॥ ७० ॥

मार्गमाणोवनेसीतांराक्षसंसंददर्शह ॥ कबंधंनामरूपेणविकृतंघोरदर्शनम् ॥ ७१ ॥ ॥ ॥

उसपीछे, सीताको ढूंडने (खोजने) लगे, सो फिरते फिरते एक विकराल-अंगवाला भयंकर,कबंधनामका राक्षस देखपडा; ॥ ७१ ॥

तंनिहत्यमहाबाहुर्ददाहस्वर्गतश्चसः ॥ सचास्मैकथयामासशबरींधर्मचारिणीम् ॥ ७२ ॥ ॥

तिसको मारके श्रीरामने जलादिया सो स्वर्गको गया, औ केहगयाकी,आगे धर्मात्मा शबरी है ७२

श्रमणांधर्मनिपुणामभिगच्छेति
राघव ॥ सोभ्यगच्छन्महातेजाः
शबरींशत्रुसूदनः ॥७३॥ ॥

हे राघव! वह कष्ट करनेवाली औ धर्ममें निपुण (कुशल) है. पीछे शत्रुओंके नाश करनेवाले, महातेजस्वी, श्रीराम शबरीके उहां जावत भये ॥ ७३ ॥

शबर्यापूजितःसम्यग्रामोदशरथा
त्मजः ॥ पंपातीरेहनुमतासंगतो
वानरेणह ॥७४॥ ॥

तहां शबरीनें विधिपूर्वक दशरथनंदन श्रीरामको पूजे. फेर पंपासरोवरके किनारे एक वांदर हनुमानसे मिले. ॥ ७४ ॥



हनुमद्वचनाच्चैवसुग्रीवेणसमाग
तः॥ सुग्रीवायचतत्सर्वंशंसद्रामो
महाबलः॥ ७५॥ ॥ ॥

हनुमानके कहनेसे सुग्रीव वानरसे जाय मिले
औ सुग्रीवको रामने सब वर्तमान कहसुनाया ७५॥

आदितस्तद्यथावृत्तंसीतायाश्च
विशेषतः॥ सुग्रीवश्चापितत्सर्वं
श्रुत्वारामस्यवानरः॥ ७६॥ ॥

पहिलेसे लेकर संपूर्ण वर्तमान औ सीताकी
बातभी सब सुग्रीव वानर सुनके॥ ७६॥

चकारसख्यंरामेणप्रीतश्चैवाग्नि
साक्षिकम्॥ ततोवानरराजेनवै
रानुकथनंप्रति॥ ७७॥ ॥

प्रसन्न होकर रामकेसाथ अग्नीकी साक्षीसे मित्राई

करता भया. तिस पीछे मेरे भाई वादरोंके राजाबा-
लीके साथ मेरा बैरहै, ऐसा कहता भया. ॥ ७७ ॥

रामायावेदितंसर्वंप्रणयाद्दुःखिते
नच ॥ प्रतिज्ञातंचरामेणतदावा
लिवधंप्रति ॥ ७८ ॥ ॥ ॥

जब स्नेहसे सब दुःखकी बात रामको कह ब-
ताई तब श्रीरामनेंभी वालिके मांरनेकी प्रतिज्ञा
करी. ॥ ७८ ॥

वालिनश्चबलंतत्रकथयामासवान
रः ॥ सुग्रीवःशंकितश्चासीन्नित्यं
वीर्येणराघवे ॥ ७९ ॥ ॥

सुग्रीव, वालीका बल रामके आगे कहताभया,
औ हररोज मनमें वालीके बलसे रामके उपर शं-
कित होता; ॥ ७९ ॥

राघवप्रत्ययार्थंतुदुंदुभेःकायमुत्त
मम् ॥ दर्शयामाससुग्रीवोमहाप
र्वतसन्निभम् ॥ ८० ॥ ॥

फेर सुग्रीव रामके बलका विश्वास होनेको उहां ऋषिमूकपर्वतपर दुंदुभीराक्षसका सूखा शरीर पर्वत-समान पडा था सो दिखाता भया ॥ ८० ॥

उत्स्मयित्वामहाबाहुःप्रेक्ष्यचास्थि
महाबलः ॥ पादांगुष्ठेनचिक्षेपसं
पूर्णंदशयोजनम् ॥ ८१ ॥ ॥

महाबाहु, बलवान एसे रामभी उस हाडको देख, कछुक हंसकर, पांवके अंगूठेकी ठोकर जो मारी सो पूरे दशयोजन (चालीस कोश) जाय पडा ॥ ८१ ॥

विभेदचपुनस्तालान्सप्तैकेनमह

षुणा ॥ गिरिंरसातलंचैवजनय
न्प्रत्ययंतदा ॥ ८२ ॥ ॥ ॥

फेर एकही बडा बाण लेकर, जो मारा सो सातों ७ ताडके झाड औ पर्वत औ रसातल-पाताल एक-दम भेदडाले, औ सुग्रीवकों विश्वास करदिया. ॥ ८२ ॥

ततःप्रीतमनास्तेनविश्वस्तःसमहा
कपिः ॥ किष्किन्धांरामसहितोज
गामचगुहांतदा ॥ ८३ ॥ ॥

फेर सुग्रीव खूब विश्वास पायके, प्रसन्न होवत संता श्रीरामको साथ लेकर किष्किंधा-गुफाके ऊपर गया. ॥ ८३ ॥

ततोऽगर्जद्धरिवरःसुग्रीवोहेमपिं
गलः ॥ तेननादेनमहतानिर्जगाम
हरीश्वरः ॥ ८४ ॥ ॥ ॥

तहां सोनेसा सुंदर औ पिपर आंगवाला कपिश्रेष्ठ सुग्रीव, गर्जना करत भया. तिस-बडे-नादको सुनके कपि-राज वाली, गुफाके बहार निकसा. ॥ ८४ ॥

अनुमान्यतदातारांसुग्रीवेणसमा
गतः ॥ निजघानचतत्रैवशरेणैके
नराघवः॥ ८५॥ ॥ ॥

तब वालीकी स्त्री तारा वालीको रोकवेको ठाडी भयी उसको, समुझाय, वाली सुग्रीवसे कुस्ती लडनेको लगा, उसी युद्धमें श्रीरामनें एकही बाणसे मारडाला. ॥ ८५ ॥

ततःसुग्रीववचनाद्धत्वावालिनमा
हवे ॥ सुग्रीवमेवतद्राज्येराघवःप्र
त्यपादयत् ॥ ८६ ॥ ॥ ॥

फेर श्रीरामनें सुग्रीवके कहनेसे वालीको मार, सुग्रीवहीको इसराज्यपर स्थापन किया (बेठाया) ॥ ८६ ॥

सचसर्वान्समानीयवानरान्वान
रर्षभः ॥ दिशःप्रस्थापयामासदि
दृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ८७ ॥ ॥

वह सुग्रीव जानकीजीको धूंडनेकेवास्ते सब पृथ्वीके वानरोंको बुला, औ दशों दिशाओंमें पठावता भया. ॥ ८७ ॥

ततोगृध्रस्यवचनात्संपातेर्हनुमान्
बली ॥ शतयोजनविस्तीर्णपुप्लुवे
लवणार्णवम् ॥ ८८ ॥ ॥

फेर संपाती-गीधके कहनेसे महाबली हनुमानजी सौ १०० योजन (चारसौ ४०० कोश) चौडे खारे समुद्रको कुदके लांघ गये. ॥ ८८ ॥

तत्रलंकांसमासाद्यपुरींरावणपालि
ताम् ॥ ददर्शसीतांध्यायंतीमशो
कवनिकागताम् ॥ ८९ ॥ ॥

उहां रावणकी रखवालीभयी लंका-नगरीको जाय, अशोकवनमें ध्यानकरती सीताजीको देखते भये ॥ ८९ ॥

निवेदयित्वाभिज्ञानंप्रवृत्तिंविनि
वेद्यच ॥ समाश्वास्यचवैदेहींमर्द
यामासतोरणम् ॥ ९० ॥ ॥

तब हनुमानजी सीताजीको चिन्हार जो श्रीराममुद्रिक सो देके श्रीरामजीकी संपूर्ण बात सुनाई, औ अच्छीतरह संदेश कह कर समुझायकर फेर रावणके अशोक-वनका बाहरका दरवाजा औ अशोक-वन उजाडते भये ॥ ९० ॥

पञ्चसेनाग्रगान्हत्वासप्तमंत्रिसु
तानपि ॥ शूरमक्षंचनिष्पिष्यग्र
हणंसमुपागमत् ॥ ९१ ॥ ॥

फेर उहां पांच सेनापति लडनेको आये उनको मारे, सात मंत्रियों (प्रधानोंके) पुत्रोंको मारे, रावणके पुत्र शूर अक्षकुमारकोभी रगड डाला. फेर ब्रह्मास्त्रके फांसेमें गठगये ॥ ९१ ॥

अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानंज्ञात्वापैता
महाद्वरात् ॥ मर्षयन्राक्षसान्वी
रोमंत्रिणस्तान्यदृच्छया ॥ ९२ ॥

यद्यपि आप (हनुमान) कोतौ ब्रह्मास्त्र न बांधशके पर ब्रह्माके वरदानको मानदे, आपही; स्वेच्छासे उन प्रधान औ राक्षसोंके पराक्रमको सहनकरके, गठगये ॥ ९२ ॥

ततोदग्ध्वापुरींलंकामृतेसीतांच
मैथिलीम् ॥ रामायप्रियमाख्या
तुंपुनरायान्महाकपिः ॥ १३ ॥ ॥

फेर महावीर हनुमान, एक, मैथिल-राज-कुमा-
री सीताहीको बचायके, सारी लंका-नगरीको
जलायके, सीताजीकी प्रिय-वार्ता श्रीरामको क-
हनेको पीछे लौट-आये ॥ १३ ॥

सोभिगम्यमहात्मानंकृत्वारामंप्र
दक्षिणम् ॥ न्यवेदयदमेयात्मादृ
ष्टासीतेतितत्त्वतः ॥ १४ ॥ ॥

औ महात्मा श्रीरामके पास जाय, उनको
प्रदक्षिणा फिरके,मैने अच्छीतरहसे सीताजी देखे,
एसा वे महाबली कहने लगे ॥ १४ ॥

ततःसुग्रीवसहितोगत्वातीरंमहो

दधेः ॥ समुद्रंक्षोभयामासशरैरा
दित्यसन्निभैः ॥ १५ ॥ ॥

फेर श्रीराम; सुग्रीव, औ सब वांदर-फौज साथ लेकर समुद्रके तटपर गये औ समुद्रको मार्ग न देनेके कारण; सूर्यसमान बाणोंकरके पाताल-पर्यंत खलबलाय डारा ॥ १५ ॥

दर्शयामासचात्मानंसमुद्रःसरितां
पतिः ॥ समुद्रवचनाच्चैवनलंसेतु
मकारयत् ॥ १६ ॥ ॥ ॥

अब नदीओंका पति समुद्र, आप मूर्तिमान आयके खडा भया; फेर उसके कहनेसे नलके हात सेतु (पूल) बंधवाया ॥ १६ ॥

तेनगत्वापुरींलंकांहत्वारावणमा
हवे ॥ रामःसीतामनुप्राप्यपरांव्री
डामुपागमत् ॥ १७ ॥ ॥

और उस- सेतुके उपरसे लंकामें जायके, संग्राममें रावणको मारके, श्रीराम, सीताजीसे मिले, पर, बडी लिहाज आई की, रावणके घरमें रही हुई सीताको मैं राखुं तौ लोक मुझको क्या कहेंगे ॥ ९७ ॥

तामुवाचततोरामःपरुषंजनसंसदि ॥ अमृष्यमाणासासीताविवेशज्वलनंसती ॥ ९८॥ ॥ ॥

फेर श्रीराम सीताजीको सारे-राक्षस औ वानर लोगोंकी सभामें कठिन कठिन उलटे सुलटे बचन बोलने लगे, सो सुनकर सती-सीतासे सहन न भया सो अग्नीकी चिता बनाके उसमें कूदपडी ॥९८॥

ततोग्निवचनात्सीतांज्ञात्वाविगतकल्मषाम् ॥ कर्मणातेनमहतात्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ ९९ ॥ ॥

फेर अग्नि मूर्तिमान आयके सीताको जैसी कीतैसी रामको देकर, कहने लगा की यह सीता निर्दोष है. तब अग्निके कहनेसे जानकीको निष्पाप जान, श्रीरामनें स्वीकार किया. तिसबडे भारी कामको, याने पिताकी आज्ञासे भारीवनवास, स्त्रीकेअर्थ समुद्रतरके राक्षस-वध, धर्मके अर्थ प्यारी स्त्रीको अग्निमें जलनेदेना, औ देवोंका बडाभारी शत्रु-नाश; देखके स्थावर (स्थिर) जंगम (चर) तीनों जगतः- ॥ ९९ ॥

सदेवर्षिगणंतुष्टंराघवस्यमहात्म
नः॥बभौरामःसंप्रहृष्टःपूजितःस
र्वदैवतैः ॥ १०० ॥ ॥ ॥

देव ऋषिसहित सब महात्मा श्रीरामके कामको देख देख प्रसन्न प्रसन्न भयो अब सब-देवोंसे पूजित हो; श्रीराम, प्रसन्न होकर, शोभा पानेलगे॥१००॥

अभिषिच्यचलंकायांराक्षसेंद्रंवि
भीषणम् ॥ कृतकृत्यस्तदारामो
विज्वरःप्रमुमोदह ॥ १०१ ॥ ॥

फेर लंकामें विभीषणको राक्षसोंके राज्यका अभिषेक कर, सब पीडाओंसे रहित औ कृत-कार्य (कामोंसे निवृत्त) होकर आनंदित होते भये ॥ १०१ ॥

देवताभ्योवरंप्राप्यसमुत्थाप्यच
वानरान् ॥ अयोध्यांप्रस्थितोरा
मःपुष्पकेणसुहृद्वृतः ॥ १०२ ॥

फेर श्रीराम देवोंसे वरदानपाकर, लडाईमें मरेहुए सब वांदरोंको जीवायके सब मित्र-स्वजनोंके मध्यहोके, पुष्पक विमानमें बैठकर अयोध्याजीको चले. ॥ १०२ ॥

भरद्वाजाश्रमंगत्वारामःसत्यपरा
क्रमः ॥ भरतस्यांतिकेरामोहनुमं
तंव्यसर्जयत् ॥ १०३ ॥ ॥

अब सत्य-पराक्रमी राम, भरद्वाजमुनिके आश्र-
ममे जायके, भरतजीके पास हनुमानजीको
भेजते भये ॥ १०३ ॥

पुनराख्यायिकांजल्पन्सुग्रीवस
हितस्तदा ॥ पुष्पकंतत्समारुह्यनं
दिग्रामंययौतदा ॥ १०४ ॥ ॥

तब भरतजीको मिलके उहांसे पीछे विमानमें
बैठके, सुग्रीवादिकोंकेसहित कथा वार्ता [illegible]
हत भरतजीके नंदिग्राममें पधारे आए॥ १०४॥

नंदिग्रामेजटांहित्वाभ्रातृभिःस
हितोनघः ॥ रामःसीतामनुप्राप्य

राज्यंपुनरवाप्तवान् ॥ १०५ ॥

नंदिग्राममें भाईओं समेत परम पुनीत श्रीराम, जटाओंको उतारके, सीता औ भाईओं समेत फेर राज्य करत भये ॥ १०५ ॥

हृष्टःप्रमुदितोलोकस्तुष्टःपुष्टःसुधार्मिकः ॥ निरामयोह्यरोगश्चदुर्भिक्षभयवर्जितः ॥ १०६ ॥ ॥ ॥

तहा सब लोक; प्रसन्न, आनंदी, संतोषी, तरताजे, धर्मको खूब समालनेवाले, नीरोगी मनःसंताप-रहित, औ दुष्काल, भय, इनोंने वर्जित हते ॥ १०६ ॥

नपुत्रमरणंकेचिद्द्रक्ष्यंतिपुरुषाःकाचित् ॥ नार्यश्चाविधवानित्यंभविष्यंतिपतिव्रताः ॥ १०७ ॥ ॥

कभी कोई पुरुष पुत्रकी मौतको न देखता, और स्त्रियों विधवा नहोती औ सदा पतिव्रता रहती ॥ १०७ ॥

नचाग्निजंभयंकिंचिन्नाप्सुमज्जंति जंतवः ॥ नवातजंभयंकिंचिन्ना पिज्वरकृतंतथा ॥ १०८ ॥ ॥

कभी अग्निका भय नहोता, कोई जीव जल-में न डूबते, कोईको सन्निपात-वायु न [illegible] कोईको ज्वर न आवता ॥ १०८ [illegible]

नचापिक्षुद्भयंतत्रन[illegible] था ॥ नगराणिचर[illegible] न्ययुतानिच ॥ १०[illegible]

और श्रीरामके राज्यमें [illegible] चोरोंका भय नथा, और स[illegible] औ धनसे भरे पूरे रहते ॥ १[illegible]

नित्यंप्रमुदिताःसर्वेंयथाकृतयुगे
तथा ॥ अश्वमेधशतैरिष्ट्वातथाबहु
सुवर्णकैः ॥ ११० ॥ ॥ ॥

सब लोक हमेशा प्रसन्न रहते, जैसे सत युगमें
रहतेथे. श्रीरामचंद्रने सौ १०० अश्वमेध यज्ञ किये
बहुत सुवर्णकी मोहरें दान करी. ॥ ११० ॥

गवांकोट्ययुतंदत्वाविद्वद्भ्योविधि
तर्हा स्म ॥ असंख्येयंधनंदत्वाब्रा
ताजे, धर्मको यशाः ॥ १११ ॥ ॥
संताप-रहित, औ दु स्वी श्रीरामने, दशहजार-क-
ते ॥ १०६ ॥ ,००००० गौदान विधिपूर्वक
नपुत्रमरणंकेदिये. अनगिनती रत्नादिक
कचित् ॥ ३। १११ ॥
भविष्यंतिपतंगुणान्स्थापयिष्य